

## आईओटी अनुप्रयोग के लिए साइबर-भौतिक प्रणालियों पर कर रहे ध्यान केंद्रित

इंदौर। पर्यावरण साइबर भौतिक प्रणालियों के लिए भारत-दक्षिण कोरिया संयुक्त नेटवर्क केंद्र (जेएनसी), आईआईटी इंदौर पांच दिवसीय पर्यावरण साइबर भौतिक प्रणालियों पर ऑनलाइन इंडो-कोरिया संयुक्त प्रशिक्षण स्कूल/कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। कार्यशाला का उद्देश्य आईओटी अनुप्रयोग के लिए साइबर-भौतिक प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करना है। कार्यशाला 27 अगस्त तक चलेगी। कार्यशाला का उद्घाटन आईआईटी मद्रास के प्रोफेसर वी.कामकोटी ने किया, जिन्हें सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए एआई का लाभ उठाने की संभावनाओं का पता लगाने के लिए, एआई पर कार्यबल के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है। प्रोफेसर कामकोटी ने पर्यावरण साइबर भौतिक प्रणालियों के महत्व और आधुनिक समय में सतत विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यशाला के पहले दिन डॉ. संतोष कुमार विश्वकर्मा, जेएनसी, भारत के प्रधान अन्वेषक ने संयुक्त नेटवर्क केंद्र और संबद्ध भागीदारों के बारे में एक ब्रीफिंग दी। इसके बाद प्रोफेसर अविनाश सोनोवने, डीन, अंतर्राष्ट्रीय मामलों और आउटरीच, आईआईटी इंदौर ने महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

450 से अधिक प्रतिभागी ले रहे हैं  
भाग: पहला इंटरैक्टिव सत्र कोरिया के इंचियोन नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ. सुंग.हुन जिन ने लिया। उन्होंने लो डायमेंशनल सेमीकंडक्टर्स पर आधारित लाइट टू-फ्रीक्वेंसी रूपांतरण सर्किट में प्रगति के बारे में गहराई से चर्चा की। दोपहर का सत्र उदय भोले, उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी की अध्यक्षता में साइबेक टेक्नोलॉजीज की टीम द्वारा एक प्रयोगात्मक प्रदर्शन के साथ शुरू हुआ। कार्यशाला के दूसरे दिन डॉ. अंबिका प्रसाद शाह, सहायक प्रोफेसर, आईआईटी जम्मू ने वीएलएसआई सर्किट और सिस्टम में विश्वसनीयता के मुद्दों पर बात रखी। इसके बाद एक ओर सत्र डॉ. ताएहुई ना, सहायक प्रोफेसर, आईएनयू, दक्षिण कोरिया द्वारा किया गया। चर्चा का विषय एसटीटी-एमआरएम और लो-पावर आईओटी अनुप्रयोगों के लिए इसका सेसिंग ऑपरेशन था। नाइलिट कालीकट के वैज्ञानिक डॉ. जयराम यू किदव ने आरआईएससी-वी आधारित एफपीजीए का उपयोग करते हुए एम्बेडेड डिजाइन पर एक प्रायोगिक प्रदर्शन किया।